M.A. SEM-2
Paper-5

कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

प्रश्न- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके मण्डल (भारतेन्दु मण्डल) के साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर- भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र को आधुनिक काल का तथा हिन्दी गद्य का जनक कहा जाता है। इनकी रचनाकाल को ध्यान में रखकर इस काल को समयावधि 1868-1893 ई० तक मानी है। इन्होंने काव्यक्षेत्र को आधुनिक विषयों से सम्पन्न किया और रीति की बंधी बंधाई परिपाटी से कविता को मुक्त कर आधुनिक युग का द्वार खोल दिया। इतना ही नहीं राष्ट्रीय भावना का उदय भी इसी काल में हुआ। जैसे उदाहरण स्वरूप देखा जा सकता है —

"रोवहु सब मिलि आवहु भारत भाई।
हा-हा भारत दुर्दशा देखी न जाई।"

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने साहित्य के हर विधाओं में अपना योगदान दिया। उनके मौलिक नाटक हैं— "वैदिक हिंसा-हिंसा न भवति" चन्द्रावली नाटिका 'विषस्य विषमौषधम्' 'भारत दुर्दशा' 'अंधेर नगरी' 'नीलदेवी' आदि। अनुदित नाटकों में 'विद्यासुन्दर' 'पाखण्ड विडम्बन' 'धनंजय विजय' 'सत्य हरिश्चन्द्र' 'कर्पूर मंजरी' आदि प्रमुख हैं। 'प्रेमालु वर्षण' 'प्रेममाधुरी' 'प्रेम तरंग' 'सतसई सिंगार' आदि प्रमुख काव्य कृतियां हैं। 'हरमीर हठ' 'रामलीला' 'सलोचना' आदि प्रमुख उपन्यासों की रचना की है। 'मिलता' 'सूर्योदय' आदि निबंध भी इन्होंने लिखा है इतना ही नहीं इन्होंने 'कश्मीर कुसुम' एवं 'बादशाह दर्पण' जैसे इतिहास ग्रंथ भी लिखा है।

भारतेन्दु जी ने भाषा संस्कार करते हुए सभी दोषों से अपनी भाषा को मुक्त रखा। इन्होंने न केवल गद्य की भाषा का संस्कार किया अपितु पद्य की ब्रजभाषा को भी सुसंस्कृत किया।

Scanned with CamScanner

और मंजी हुई परिष्कृत भाषा को सामने लाए जो हिन्दी भाषी जनता की बोली थी; अतः भाषा का जो विवाद पहले से चल रहा था वह बहुत कुछ सुलझ गया।

भारतेन्दु जी का व्यक्तित्व अपनी उदारता और गुणग्राहकता आदि के कारण इतना आकर्षक और लोकप्रिय था कि उनके आस-पास लेखकों का अच्छा खासा मंडल तैयार हो गया जो भारतेन्दु मण्डल के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंडल के प्रमुख साहित्यकार हैं — बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, ठाकुर जगमोहन सिंह, अम्बिका दत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, मोहन लाल विष्णुलाल पांड्या, काशीनाथ खत्री, राधाकृष्ण दास आदि।

(1) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' — भारतेन्दु मण्डल के कवियों में प्रेमघन (1855-1923) का प्रमुख स्थान है। प्रेमघन ने 'आनन्द कादम्बिनी' और 'नागरी नीरद' का संपादन कर तत्कालीन पत्रकारिता को नया दिशा दी। 'अब्र' नाम से उन्होंने उर्दू में कुछ कविताएं लिखी हैं। इनकी प्रसिद्ध काव्यकृतियाँ हैं — 'जीर्ण जनपद', 'आनन्द अरुणोदय', मयंक-महिमा आदि। प्रेमघन ने मुख्यतः ब्रजभाषा में काव्य रचना की है। छन्दोबद्ध रचनाओं के अतिरिक्त उन्होंने लोक संगीत की कजली और लावणी शैलियों में भी सरस कविताएं लिखी हैं।

(2) प्रताप नारायण मिश्र (1856-1894) — मिश्र जी ने 'ब्राह्मण' नामक पत्रिका के संपादन का कार्य किया। प्रेम पुष्पावली, मन की लहर, श्रृंगार विलास आदि आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'प्रताप-लहरी' इनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है। हास्य व्यंग्यात्मक कविताओं के

क्षेत्र में मिश्र जी का अग्रणी स्थान है। काव्य रचना के लिए इन्होंने मुख्यतः ब्रजभाषा को ही अपनाया।

(3) बालकृष्ण भट्ट - (1845-1915) - भारतेन्दु मण्डल के सधे हुए निबंधकारों में से एक थे बालकृष्ण भट्ट। भट्ट जी का पहला निबंध 'कलिराज सभा' 1872 में 'कविवचन सुधा' में छपा। 1877 में इन्होंने 'हिन्दी प्रदीप' का संपादन आरंभ किया। भट्ट जी ने विविध प्रकार के निबंधों की रचना की। एक ओर जहाँ इन्होंने 'चलता है' जैसे व्यंग्य विनोद प्रधान निबंध लिखे वहीं दूसरी ओर भर और सम्मुचितादर, दृढ़ता, आत्मनिर्भरता, प्रेम और भक्ति, ज्ञान, भक्ति, स्पर्धा, प्रीति आदि इनके विश्लेषणात्मक और मनोवैज्ञानिक निबंध हैं जो आगे चलकर महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्यामसुन्दर दास द्वारा विकसित हुए और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल में पूर्णता की उपलब्धि की। गद्य काव्य के आद्याचार्य भी वे ही हैं। 'चन्द्रोदय' निबंध गद्य काव्य का पहला नमूना है। 'नूतन ब्रह्मचारी' एवं सौ अजान एक सुजान उपन्यासों की रचना की।

(4) ठाकुर जगन्मोहन सिंह - (1857-1899) ये मध्यप्रदेश की विजयराघवगढ़ रियासत के राजकुमार थे। श्रृंगार वर्णन और प्रकृति सौंदर्य की अवतारणा इनकी प्रमुख काव्य प्रवृत्तियाँ हैं। इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं - 'प्रेमसम्पत्तिलता', श्यामालता, श्यामासरोजिनी और देवयानी। 'श्यामा स्वप्न' शीर्षक उपन्यास में उन्होंने प्रसंगवश कुछ कविताओं का समावेश किया है।

(5) अम्बिका दत्त व्यास - ये कविवर दुर्गा दत्त व्यास के पुत्र थे। 'पियूष-प्रवाह' के संपादन का कार्य कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं - पावस पचासा, 'सुकवि सतसई' और हो हो होरी। इन्होंने खड़ी बोली में 'कंसवध' (अपूर्ण) शीर्षक प्रबंध काव्य की रचना

Scanned with CamScanner

भी आरंभ की थी। किन्तु केवल तीन सर्ग ही लिखे जा सके। 'भारत सौभाग्य' और 'जौसकर नाटक' इनके प्रमुख नाटक हैं।

(5) राधाकृष्ण दास – (1865 – 1907) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई थे राधाकृष्ण दास। 'भारत बारहमासा' और 'देश-दशा' समसामयिक भारत के विषय में राधाकृष्ण दास की प्रमुख कविताएँ हैं। इनकी कुछ कविताएँ 'राधाकृष्ण ग्रन्थावली' में संकलित हैं।

अतः कहा जा सकता है कि भारतेन्दु एवं उनके मंडल के साहित्यकारों ने साहित्य में अभूतपूर्व योगदान दिया है।